अन्तरा-शब्दशक्ति

नेह निर्झरणी

गीत संग्रह

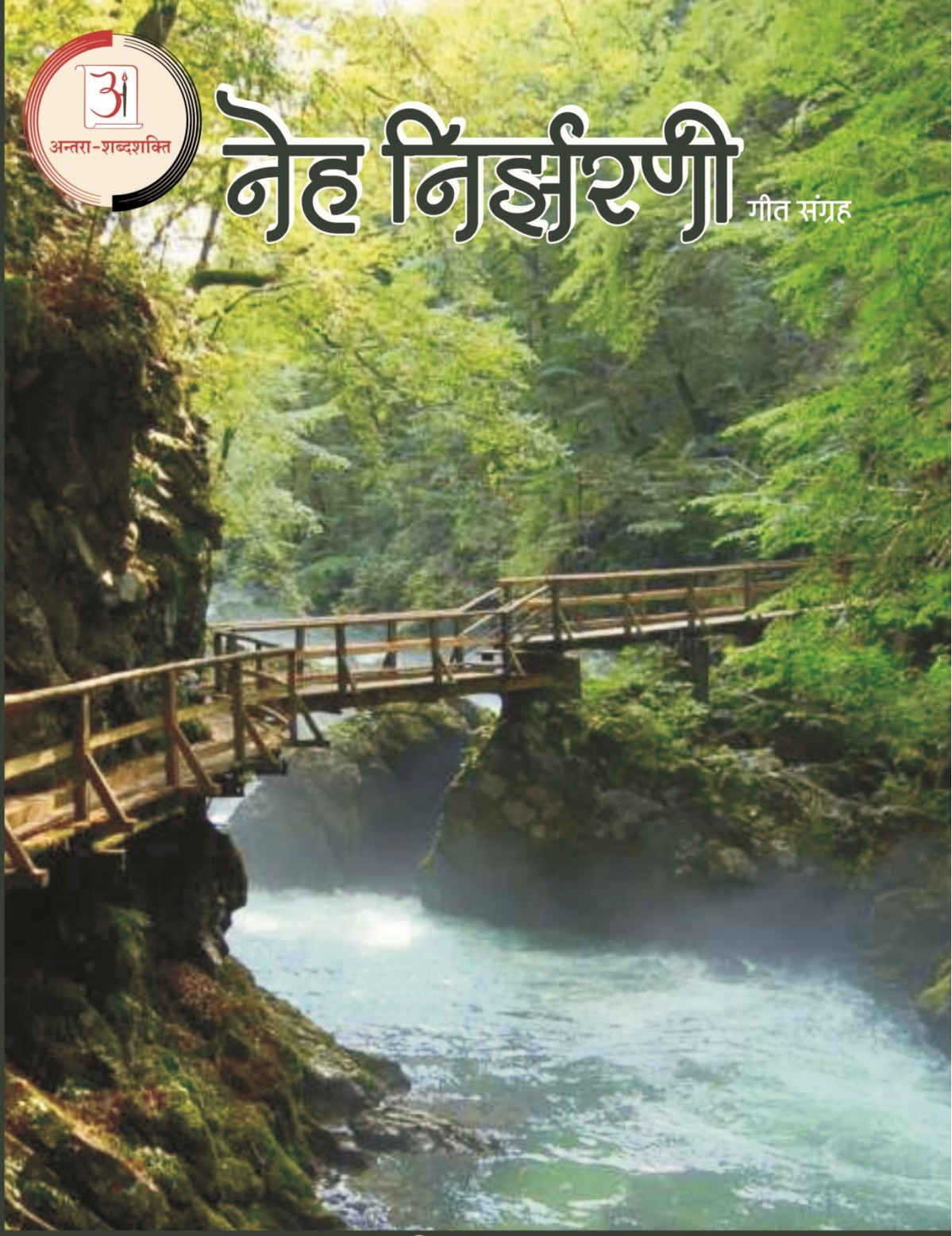

दीपशिखा सागर

नेह निर्झरणी

(गीत संग्रह)

दीपशिखा 'सागर'

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- "978-93-5372-026-1"

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन
मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१
दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९
अणुडाक- antrashabdshakti@gmail.com
अंतरताना- www.antrashabdshakti.com
प्रथम संस्करण २०१९- दीपशिखा 'सागर'
मूल्य - ६०.०० रुपये
आवरण चित्र- संदीप सोनी,वारासिवनी
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
NEH NIRJHARNI BY DEEPSHIKHA 'SAGAR'
वैधानिक चेतावनी - इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

अनुक्रमणिका

भूमिका 5

1- सरस्वती वंदना 7

2- हे मेरे गिरधर तेरी मीरा तो होना चाहती हूं 8

3- रेत सी ही हाथ से फिसल रही है ज़िन्दगी 9

4- क्या गाऊं मैं गीत मेरे सब रूठे रूठे बैठे हैं 10

5- मेरे होंठों की हँसी शोख़ जवानी दे जा। 11

6- रात पूनम की चंदा के घर 12

7- प्यासा प्यासा सपना रोया 13

8- इक प्रेम दुशाला ओढ़ मुझे 14

9- मुझसा ही कोई मुझमें करवट बदल रहा है 15

10- घर की आन बान शान हैं 16

11- बच्चा माँ तेरा साया 17

12- ज़ंजीर हाथ की ये 18

13- होली आई रँग रँगीली 19

14- रुनझुन रुनझुन पुरवाई के 20

15- तथागत जाते तुम दिनमान 21

16- शर शैया पर भीष्म 22

17- उर्मिल का वनवास 23

18- पुरा वसन उतार सभ्यता 24

19- कहाँ गए सावन के झूले 25

20- सूर्य का आलोक रथ हूँ 26

21- खूबसूरत लड़की 27

22- अश्रु नायक स्वागतम 28

23- नवीन लक्ष्य मान हों 29

24- बदल गया अब गांव सखे 30

25- सजने लगी है डोली 31

26- रंग मन के पृष्ठ भरता कौन चित्रकार है 32

भूमिका

भूमिका से ज्यादा इसे मैं आत्मकथ्य कहना पसन्द करूँगी क्योंकि जब-जब मन में भावों का आलोड़न हुआ, लेखनी से स्वयमेव, निष्प्रयास झरें हैं, हरसिंगार के पुष्प सरीखे गीत चाहे प्रेम हो, विरह हो, विकलता हो, सामयिक संदर्भ या फिर पौराणिक किरदार को नवीन दृष्टि से देखने की जिज्ञासा स्वयं को ही जैसे शब्द-शब्द में चित्रित किया है। जब कभी कृष्ण की बांसुरी के संगीत में डूबी राधिका बनी।

जब आराध्य को कन्त मान लिया. मीरा सी जोगन हो गई। उर्मिला के वनवास में उर्मिला के साथ जली तो सीता के वनवास में छल की अनुभूति से छलनी हुई हुई। नारी की पीड़ा, नित नई अग्नि परीक्षा,बेटियों का दर्द, सामाजिक सरोकार, हमारी संस्कृति के त्यौहार, उमंगों की बहार सब अंतर्मन में जब-जब गुत्थमगुत्था हुए लेखनी ने गीतों को निर्झरणी सा बहाया है, कागज़ पर प्रेम की पराकाष्ठा और समर्पण से अगर सुवासित हैं, भावनाओं का आगार, तो विरह और छल के शूलों से पूरित है, पंक्तियों की शोणित सनी राह जहाँ विलाप करती मिल जाऐंगी कामनाऐं, अभिलाषाऐं और भावनाओं की ललिताऐं. राम, कृष्ण तथागत और भीष्म जैसे महान सृष्टि पुरुषों पर भी अपनी सोच को ढाला है, नई रूप यष्टि देने का प्रयास किया है।

पूर्णतः छंदबद्ध और लयात्मकता से भरपूर गीतों की आत्मा इनकी गेयता है क्योंकि मैं मानती हूँ, जो गेय है वही गीत है.. मोहकता और सृष्टि-नटी के नर्तन के साथ भावों का सम्मिश्रण देव-योग से माँ शारदा की कृपा से स्वयमेव हुआ है मेरा इसमें कोई योगदान नहीं। माँ हिंदी के चरणों में मेरा यह प्रथम श्रद्धा सुमन समर्पित है, अश्रु नीर के आचमन, भावों की चंदन रोली और अहसास की आरती के साथ माँ वाग्देवी साहित्य सृजन के पंथ पर सदैव शीश पर वरद हस्त रखेंगीं इसी आकांक्षा के साथ।

हाँ अब बेहद आवश्यक बात इस राह पर कई आत्मीय स्वजनों का साथ आशीष, सहयोग, भाव और विचार-विमर्श पथगामी बना है, उन्हें हृदयतल की

गहराइयों से आभार देती हूँ। क्योंकि आप सब हैं तो दीपशिखा का अस्तित्व है। पति डॉक्टर कर्मवीर सिंह सागर, पुत्र सृजन सागर दोनों ही मेरे सृजन रथ के सारथी।

कुछ आत्मीय मित्र जिनकी प्रशंसा और उत्साहवर्धन ने इस पुस्तिका को मूर्त रूप दिया आदरणीय पंकज पलाशजी और आदरणीय मन्नान फ़राज़ साहब....

फेसबुक के कुछ अनमोल रिश्ते जिनके बिना कोई सृजन सम्भव नहीं था और मेरे पाठक और प्रशंसक सब साधुवाद के पात्र हैं। सबको हृदय से आभार ज्ञापित करती हूँ, गीतों की यह निर्झरणी आप सबको समर्पित है।

सुख का विहान आपका और दुख की निशा मेरी-

जो भी अच्छा है, सब आपके लिए और गलतियाँ सिर्फ़ और सिर्फ़ मेरी-

सधन्यवाद

आपकी अपनी दीपशिखा

सरस्वती वंदना

वीणापाणि, बुद्धिप्रदायिनी, झंकृत कर दो मन के तार,
शब्द-शब्द से मधुरस टपके, पँक्ति पँक्ति गाये मल्हार.....

1- शुभ्रवसन कमलासन राजित, वीणा पुस्तक कर में धार,
दीप ज्ञान का जला शारदे,हिय मानस तम के आगार।
मंच पधारो कन्ठ कन्ठ से,बहे शुचित भावों की धार.....

2- सुर, गति, नव लय, ताल छंद का, नर्तन होवै हृदय मँझार,
सत्यकाम लेखन हो मेरा, बने लेखनी माँ तलवार।
ओजस्वी वाणी से निकले,समर भूमि रण की ललकार.....

3- सुर, नर, मुनि जन, कवि मन, अभिनव, विनती करते बारम्बार,
शांति, अहिंसा पथ पर अविरल, मानवता का हो संचार।
अलंकृता मेधा, नव कल्पन, नए स्वप्न पाएं विस्तार....
वीणापाणि बुद्धि प्रदायिनी...

हे मेरे गिरधर तेरी मीरा तो होना चाहती हूं

आत्मश्लाघा की प्रवंचन वेदना से मुक्त होकर,
हे! त्रिलोकी, प्रेम साधक तुझमें खोना चाहती हूं।
मैं अकिंचन, राधिका सी प्रेम-पटरानी नहीं पर,
हे! मेरे गिरधर, तेरी मीरा तो होना चाहती हूँ।

1-कामिनी सी देह यौवन से भरा घट भी नहीं मैं,
तृप्त कर दे जो तृषा वो काम-पनघट भी नहीं मैं
भाव-सरिता भक्ति की निर्बन्ध लहरों से बनी जो,
मैं स्वयं को तुझमें हे! सागर समोना चाहती हूँ.....

2-प्राण फूंके बाँस के तन में,मधुर तानें बहीं जब,
जादुई अहसास ने उल्लास की बाँहें गहीं तब,
पूर्ण निष्ठा से समर्पित, बाँसुरी तन की करूँ मैं,
सुर-सुधा में आत्मा अपनी भिगोना चाहती हूँ।
हे मेरे गिरधर...

3-मैं न गोपी हूँ, न ग्वाला और न ही ब्रज की लता हूँ,
आस्था-श्रृंगार से पूरित हृदय की दीनता हूँ।
अश्रुओं से पाँव प्रक्षालन करूँ चिर काल तक मैं,
धड़कनों की माल में तुझको पिरोना चाहती हूँ...
हे!मेरे गिरधर तेरी मीरा तो होना चाहती हूँ।

रेत सी ही हाथ से फिसल रही है ज़िन्दगी

ये परीक्षा सख्त है, गुज़र रहा ये वक़्त है,
रुकी नहीं, थमी नहीं,बढ़ी नहीं, घटी नहीं,
ज्वार सी उफ़न रही, उछल रही है ज़िन्दगी,
रेत सी ही हाथ से फिसल रही है ज़िन्दगी.....

धड़धड़ाती रेल सी गुजरती हर पड़ाव से,
दुख के हर उतार से, सुख के हर चढ़ाव से।
हमसफ़र नए मिले पुराने मीत खो गए।
रिक्तता हृदय में स्वप्न भग्न कुछ पिरो गए।
इक पटल पे चित्र सी, कामना के मित्र सी,
पटरियों पे साथ साथ चल रही ज़िन्दगी... रेत सी ही हाथ से....

2-थाह सिंधु की कभी, पहाड़ का शिखर भी ये,
है कभी कुसुमकली तो शूल की डगर भी ये।
इक भँवर है घूमता, तीव्र है प्रवाह भी,
लड़ रही उबर रही है मन मे ले के चाह भी।
है सवार नाव पर, प्रेम के उठाव पर,
वासना की धार पर मचल रही है ज़िन्दगी... .रेत सी ही हाथ....

3-चार दिन का खेल है ,रचा जिसे है ईश ने,
है मृदा का ये बदन, गढ़ा जगत अधीश ने।
आ कि उसकी आस पर खरा उतार ले इसे,
दे न पाएगा जवाब वगना स्वर्ग में उसे।
आंसुओं के गेह में,चरम तृषा की देह में,
कबसे जाने करवटें बदल रही है ज़िन्दगी.... रेत सी ही हाथ से.....

क्या गाऊं मैं गीत मेरे सब रूठे रूठे बैठे हैं

छंदों का अनुशासन खंडित, ग़ज़लों की जिद्दत खोई,
आशा की सपनीली दुल्हन द्वारे नैनों के रोई।
शब्द लिए वनवास हृदय में, टूटे टूटे बैठे हैं,
क्या गाऊँ मैं गीत मेरे सब रूठे रूठे बैठे हैं....

1- अहसासों की परियाँ नर्तन, नहीं करें अब कागज़ पर,
घायल पांव कलम के कैसे, डोलें भाव पखावज़ पर।
प्रेम राग का सप्तक टूटा, अलंकार सब खोते हैं,
बिम्ब न जाने किस देहरी,सिर कूटे कूटे बैठे हैं.....क्या गाऊँ मैं...

2- उपमाओं पर वर्जनाओं की अमर बेल इक चढ़ती है
हुए प्रतीक धराशाई अब, चित्र न कूची गढ़ती है।
अभिव्यंजन, अभ्यर्थन, स्वागत, प्रार्थनाओं के स्वर गुम हैं,
पीड़ाओं के साये में सब टूटे फूटे बैठे हैं.....क्या गाऊँ मैं

3-अब श्रृंगार नहीं करती कविता का नेह- वधू कोई,
रस नीरस हैं ,वाक्य विदारित,आनंदित सृजिका खोई।
विकल दृष्टि से ताक रहे हैं उत्सव गान मरण शैया,
निर्विकार मन ले जग से हम छूटे छूटे बैठे हैं....कैसे गाऊँ गीत मेरे सब...

4-आवारा सपनों की मंज़िल जब तक तुम थे ओ प्रीतम,
हर धड़कन ने सुर था साधा, श्वासें छेड़े थीं सरगम।
आँखों में खारे पानी का सागर लहराता अब है,
दिल की नगरी डाकू ग़म के लूटे लूटे बैठे हैं..... क्या गाऊँ मैं गीत मेरे सब...

मेरे होंठों की हँसी शोख़ जवानी दे जा

मेरे होंठों की हँसी,शोख़ जवानी दे जा,
फिर से रंगीन मुहब्बत की कहानी दे जा।

ख़त वो पहला कि गुलाबी था लिफ़ाफ़ा जिसका,
इत्र में डूबा हुआ तन था सरापा जिसका।
एक इक हर्फ़ में बहता था वफ़ा का दरिया,
प्यार में डूबी हुई पहली निशानी दे जा,
शोख़ जज़्बों में वो पहली सी रवानी दे जा....

2-बैठ साहिल पे लिए हाथ में वो हाथों को,
सिर्फ महसूस किया लम्स से अहसासों को।
याद की सेज पे नींदों ने जो देखा अक्सर,
फिर मेरी आँख को वो ख़्वाब रूहानी दे जा,
सुरमई सुब्ह हसीं शाम सुहानी दे जा.....

3- चल चलें पार उफ़क के मिलें तारों के तले,
बीते लम्हों की हसीं धूप इरादों पे मलें।
मेरे महबूब कलेजे से लगा रक्खी जो,
तेरी हर एक निशानी को मआनी दे जा...
दिल की जोधा को वही जिल्ले सुब्हानी दे जा।

रात पूनम की चंदा के घर

रात पूनम की चंदा के घर, चाँदनी खिलखिलाती रही,
याद तेरी हृदय-शाख़ पर, बैठ बंशी बजाती रही।

1- राधिका हो गईं चाहतें सब मेरी, मन की मीरा ने महलों का वैभव तजा।
धड़कनों में घुला राग अहसास का, इक चमेली का मंडप हृदय में सजा।
रास रचने लगा स्वप्न का, कामना मुस्कुराती रही.....
याद तेरी हृदय-शाख़ पर...

2- नील आकाश ने शबनमी बूंद से, पुष्प की देह पर इक कहानी लिखी।
ख़ुशबुओं ने कहानी के किरदार में, इक महकती हुई रातरानी लिखी।
ठंडी-ठंडी हवा झूमकर, झुरमुटों को जगाती रही...
याद तेरी हृदय शाख़ पर....

3-प्रेम से आ रुका, प्रेम का कारवां, प्रेम की चाह में प्रेम के द्वार पर।
सिर कलश ले खड़ी आस ने वार दी, श्वांस हर श्वांस के पुण्य अभिसार पर।
इक सलोनी 'शिखा' दीप की, तम का घूंघट उठाती रही...
याद तेरी हृदय -शाख़ पर...

4- यूँ मिले तन कि जैसे हों धरती गगन, नव क्षितिज पर हुआ आत्मा का मिलन।
पंखुरी होंठ की अधखुली ही रही, अधमुँदे ही रहे लाज के भी नयन।
इक लहर मन की यमुना में फिर, उठके हलचल मचाती रही...
याद तेरी ह्रदय-शाख़ पर.....

प्यासा प्यासा सपना रोया

प्यासा-प्यासा सपना रोया, नैनों के मदिरालय में,
एक याद की तन्हा सिसकी, ग़म की मदिरा पीती है।
आँसूं के पैमाने छलके, आहों के आलिंगन में,
बूँद-बूँद रिसती सासों से, जीवन गागर रीती है...

1-टूटे हैं सब महल आस के,एक तुम्हारे जाने से,
खंडित प्रतिमा अहसासों की,निष्कासित बुतख़ाने से।
पत्थर होकर, पत्थर के सँग, पत्थर पूजा, पत्थर ने,
मूक-व्यथा बतलाए कैसे, क्या क्या इस पर बीती है.....जीवन गागर रीती है...

2-दुख की बदली सघन गहन हो, नित उमड़ी हृदयांगन में,
बन्धन की टूटन का सावन, खेला है इस प्रांगण में।
कागज़ की कश्ती पर सहमा,बैठा यौवन का बच्चा,
मृगतृष्णा आंखों में लेकर,तृष्णा पल पल जीती है....जीवन गागर रीती है...

3-ओ निष्ठुर,निर्मोही प्रियतम,नैन बिछाए राहों में,
एक वियोगन सूनी रातें लेकर बैठी बाँहों में।
चंदा की किरणों से जलती, देह लिए ओसारे पर,
बिसरी बातों के धागों से, घाव प्रणय के सीती है.....जीवन गागर रीती है..

इक प्रेम दुशाला ओढ़ मुझे

इक प्रेम दुशाला ओढ़ मुझे, छलना बन कर प्रारब्ध छले,
आँखों के नम आलिंगन में हर सपने ने दम तोड़ा है।
हर बार वेदना के तट पर,इक नाव भरोसे की डूबी,
हर बार बीच मंझधार मुझे नाविक ने लाकर छोड़ा है.....

1- मैं शाकुन्तल अभिशप्त प्रेम की परिपाटी की वाहक हूँ,
राधा हूँ कृष्ण विरह में जलती हृदयांगन की पावक हूँ।
मैं यशोधरा गौतम जिसको बिन बोले सोता छोड़ गए,
उर्मिल हूँ लखन जिसे वनवासित घर में रोता छोड़ गए।
क्यों मेरे त्याग समर्पण का प्रियतम ने जाना मोल नहीं,
क्यों ईश स्वयं कहलाने को निज आनन मुझसे मोड़ा है.... हर बार मुझे मंझधार

2-जब जब मैंने चाहा विनिमय मन के कोमल अहसासों का,
खेल बनाया मुझको मेरे साथी ने केवल पांसों का।
दांव लगाए मुझ पर कितने, कितनी बार अस्मिता बेची,
राजमहल के सभाकक्ष ने लुटती द्रुपद सुता थी देखी।
मेरे काँधों ने पौरुष के पीड़ा- सागर अगणित सोखे,
पर मेरे आवाहन पर मारा, बस छल बल का कोड़ा है... हर बार मुझे मंझधार

3-मैं वर्तमान की छाया हूँ,अब भी बदला इतिहास नहीं,
विश्वासघात ही मिला मुझे, प्रियतम के अंतस वास नहीं।
औरों को दिया समय अपना, और गीत प्रशंसा के गाए,
मेरे हिस्से में निविड़ प्रतीक्षा के आकुल क्षण ही आए।
मुझको बदला सर्वांग मगर, किंचित भी तुम न बदल पाए,
ए मनुज प्रणय अपराध तेरा, बतलाना सच क्या थोड़ा है.. हर बार मुझे मंझधार.

मुझसा ही कोई मुझमें करवट बदल रहा है

मुझसा ही कोई मुझमें करवट बदल रहा है,
यादों की रहगुज़र पर, दिन रात चल रहा है।
बचपन का एक पन्ना हाथों में वो दबाए,
मेरी क़िताब ए दिल के हर्फ़ों में ढल रहा है।

1-फिर याद आ रहा है गुज़रा हुआ ज़माना,
वो चिठ्ठियाँ गुलाबी पुरसोज़ वो तराना।
घण्टी में साइकिल की, घुलता वफ़ा का जादू,
वो बदहवास सांसें जिन पे नहीं था काबू।
दरिया वो चाहतों का अब भी उछल रहा है..... मेरी किताब ए दिल....

2-लिखते थे नाम उसका कागज़ पे उंगलियों से,
सपनों के पर लगाकर उड़ते थे तितलियों से।
हाथों से दिल बनाकर वो तीर का निशाना,
वादे वो सच्चे झूठे, विद्या की कस्में खाना।
मासूम प्यार अब भी धड़कन में पल रहा है... मेरी किताब ए दिल.....

3-दौलत हसीं ये दिल की दिल ही में है छुपाई,
जज़्बात की हुई जो उम्मीद से सगाई।
बरसों गुज़र गए पर लम्हे महक रहे हैं,
कक्षा की बेंच पिछली दो दिल बहक रहे हैं।
हाथों में अब भी कोई ख़ुश्बू सी मल रहा है..... मेरी किताब ए दिल के.....!

घर की आन बान शान हैं

घर की आन बान हैं, माँ पिता की जान हैं,
आंख में लिए सपन, आस की उड़ान हैं।
चूमने चलीं गगन, वेगवान ज्यूँ पवन
नेह के चमन की गुलबहार हैं ये बेटियां, शब्द शब्द गीत हैं मल्हार हैं ये बेटियाँ..

1-यूँ तो जन्म लेते ही,चली हैं तेग धार पर,
बदनज़र पड़ी हर एक अंग हर उभार पर,
रौंदते हैं बागबान ख़ुद कली को ही कभी,
या किसी भ्रमर की आँख है हसीं शिकार पर।
रोता आज ईश है, काँपता शिरीष है, सभ्यता का बन गईं मज़ार हैं ये बेटियाँ...

2-मंदिरों की ओट में लुटी कहीं पे अस्मिता,
मस्जिदों की आड़ में है तार तार सभ्यता।
चर्च में जली है मोम सी ही आबरू कहीं,
या गुरु के द्वार पर लहूलुहान अन्विता।
मौन आसमान है, मूक हर ज़बान है, तन से मन से क्षत हुआ सितार हैं ये बेटियाँ

3-निर्भया की रूह कह रही है प्रण ये ठान लो,
आसिफ़ा के कातिलों का शीश ही उतार लो।
गोलियों से भून दो या चढ़ाओ दार पर,
इंतकाम लो कि गलतियाँ ही कुछ सुधार लो।
मनुष्य हो मनुज रहो, क्रोध की अगन दहो, बहुत डरी-डरी सी बेक़रार हैं ये बेटियां!

बच्चा माँ तेरा साया

अहसासों के गांव में चढ़ती धूप ग़मों की झुलसाए,
ढूंढ रहा मेरे अंदर का बच्चा माँ तेरा साया।
अनमन सारे स्वप्न पड़ें हैं,आंखों से छलका सावन,
अपने आँचल की इक़ बार मुझे आ दे दे माँ छाया।

चलना सीखा था तेरे आशीषों की छैयां छैयां,
गिरती जब भी तूने उठाया पकड़ पकड़ मेरी बैंया।
ठोकर खाते ही अब भी माँ नाम तेरा लब पर आए,
यादों ने कलसे ने यूँ तो प्रेमिल जल है ढुरकाया.....अपने आँचल.....

2- कभी सुखों की छाया थी माँ, कभी दर्प की सूरत थी,
मेरे मन मंदिर की देवी, इक ममता की मूरत थी।
धड़कन अब तक करती वंदन, सांस सलामी देती है,
रौनक ने दुनिया की चाहे कितना ही मन भरमाया.....अपने आँचल....

तेरे आदर्शों पर चलकर प्रतिछाया तेरी हूँ माँ,
हर रिश्ते का बन्ध सुपावन, भावों की चेरी हूँ मां।
अंश तेरा मैं तुझसे अलग कब, अहसासों में तू ही तू,
स्पंदन अन्तस का मैनें, तुझसे ही तो था पाया....अपने आँचल....

ज़ंजीर हाथ की ये

जंजीर हाथ की ये, जिस दिन मैं तोड़ दूंगी,
रुख इस जहां का अपनी, हस्ती से मोड़ दूंगी।

1-कमज़ोर मैं नहीं हूँ, बस प्रेम की हूँ दासी,
मर्ज़ी से अपनी ली है अपने गले में फाँसी।
रिश्ते सहेजती हूँ, सब कुछ हूँ अपना देती,
खुशियों का नूर देकर दर्द ओ अलम ही लेती,
आएगा ज़लज़ला जब रस्ता ये छोड़ दूंगी....

2-ये आसमान अपनी मुट्ठी में भींचती हूँ,
नौ मास कोख में ही नव बीज सींचती हूँ।
यूँ चाँद पे है डेरा,कमतर नहीं किसी से,
क्यों एतराज़ सबको, मेरी हरिक खुशी से।
जिस दिन भी सिर उठाया सब को झिंझोड़ दूंगी.....

3-इक दिल हूँ मैं धड़कता, तन ही न मुझको जानो,
जज़्बात मेरे समझो, इंसान मुझको मानो।
साथी मनुज मैं तेरी, घर को बनाती घर हूँ,
रब का हसीन सपना,मैं आस की सहर हूँ,
जीवन के हर भंवर की बाँहें मरोड़ दूंगी.....

होली आई रँग रँगीली

गालन गुलचा मारूँ रँग में रँग दूँ रे सांवरिया,
होली आई रंग रँगीली, बरसे प्रेम बदरिया .....

1-नेह रंग में भर पिचकारी सररर तन पर डालूँ रे,
पिछले फागुन का बदला मै इस फागुन में निकालूँ रे।
आज न बच पाओगे मोसे जतन पिया तुम लाख करो,
चुनरी ओढ़,माथ पर बिंदिया नैनन कजरा खूब भरो।
रसिया बनकर नाच दिखाओ अपनी ही नगरिया....

2-तान रसीली जोगीरा की अंग अंग भरती जादू,
दहक रहा तन प्रीत अगन में, मन होता है बेकाबू।
होली का हुड़दंग मचा है,मस्ती की बौछार हुई,
लट्ठमार होली खेलन को गोरी हर तैयार हुई।
आज तो खुद को गोपी समझे मेरे गॉव की डुकरिया.....

3-गोरी मैं भी तरस रहा हूँ तुम संग खेलन को होली,
मधु सी मीठी लगती मुझको तेरी प्रेम पगी बोली।
आजा रंग गुलाल लिए मैं कबसे राह निहारूँ रे,
तन मन क्या है सात जनम भी गोरी तुझ पर वारूँ रे।
कृष्ण बनूं मैं तेरा और तू मेरी राधा गुजरिया.....

रुनझुन रुनझुन पुरवाई के

रुनझुन रुनझुन पुरवाई के पांवो में बजते घुंघरू,
नाच रही सुधियों की गौरा, मन शिव बजा रहा डमरू,
मौसम बीते मधुमासों का,फिर से छाया हृदयांगन,
बंजारा मन ढूंढ रहा है,आलय सपनों का पावन....सुरभित आशा मनभावन....

1-गजरे की महकी कलियों में अब तक है खुशबू तेरी,
काजल भीगा भीगा सा है सांसें तक दहकें मेरी।
कोयल कूंजे आम्र कुंज में, बासन्ती मन हो आया,
पपिहे की पी पी को सुनकर, अंतर में दुख गहराया।
कामदेव के शर चलते हैं,कुसुमित धरती बौराई,
चटके फूल पलाशी करते हैं चाहत का विस्तारण..... बहता आंखों से सावन.....

2- कंगन खनके पायल छनके,पांव महावर दहक रहा,
आलिंगन में अधर कोर की,चुनरी का तन लहक रहा।
नथुनी, बिंदिया, बेसर, टीका,गठबंधन को तरस रहे,
कब सपनों का राजकुँवर आकर मंडप में हाथ गहे।
सारे आभूषण फीके हैं,सब श्रृंगार निर्रथक है,
प्रेम अहिल्या का प्रिय राम, बनो कर डालो उद्धारण...बहता आंखों से सावन...

3-आज तथागत पूछे तुमसे, मेरे मन की यशोधरा,
जग की खातिर बने देव तुम, यूँ हो भी तुम स्वर्ण खरा,
ज्ञान यज्ञ की बलिवेदी पर, क्यों मुझको यूँ हव्य किया,
मैनें तो हर प्रणय सेज पर, सांसों तक को द्रव्य किया।
प्रश्न यही बस इसका उत्तर देना ही होगा तुमको,
क्यों मेरे इक प्रेमिल व्रत का हो न सका तुमसे पारण...बहता आंखों से सावन..

तथागत जाते तुम दिनमान

गहन नींद में सोई थी मैं, सुख सपनों में खोई थी में।
छोड़ गए सोती शैया पर,बिन मांझी जैसे नैया पर।
एक बार तो मांगा होता, प्रणय-बंध बलिदान, तथागत जाते तुम दिनमान....

1-माना लक्ष्य बड़े साधे थे,तुम बिन प्राण मगर आधे थे।
करती तिलक स्वयं निज कर से, विचलित करती नहीं डगर से।
राजवधू गढ़ती निष्ठा का, एक नया प्रतिमान... तथागत जाते तुम दिनमान...

2-सीता बन मैं साथ चली थी, उर्मिल सा वनवास दिया है।
ईश कहाए तुम मुझको पर, खंडित इक विश्वास दिया है।
करुणा सागर लगा न पाए, उर-पीड़ा अनुमान... तथागत जाते तुम दिनमान...

3-सोग मनाया अंर्तमन में,क्रंदन बोया निर्जन वन में।
रोता लाल मनाया मैनें,तन का दीप जलाया मैंने।
बुद्ध हुए तुम मैं अभिशापित प्रीति राग का गान... तथागत जाते तुम दिनमान....

4-सौंप दिया सुत चरण कमल में, ढूँढी खुशियां नहीं महल में।
दीक्षित होकर तुमसे साजन , बांट रही अब ज्ञान मैं पावन।
सात जनम के गठबंधन का, ख़ूब रखा सम्मान...तथागत जाते तुम दिनमान...

शर शैया पर भीष्म

सत्य पंथ के राही होकर झूठ वरण करने वाले,
नैतिकता के हामी होकर,धर्म- हनन करने वाले,
शर-शैया पर भीष्म पड़े हो, मृत्यु-वरण करना होगा,
अंधे राजधर्म की खातिर प्राण-हवन करना होगा.....

1- एक शपथ गंगा सुत तुमने, बरसों पहले खाई थी,
आजीवन अविवाहित रहकर अपनी बात निभाई थी।
राजसिंहासन से निष्ठा का व्रत-पालन था माना पर,
द्रुपदसुता के चीर -हरण पर क्यों बस दृष्टि झुकाई थी।
अब नारी के आर्तनाद का भार-वहन करना होगा... शर-शैया पर भीष्म...

2- तुम्हें पराजित करना देवों के वश की थी बात नहीं,
मगर पड़े हो रणभूमि में, कोई भी तो साथ नहीं।
पूछ रहा अभिमन्यु तात! है, तब तुम कैसे मौन रहे,
छल से जब घेरा था सबने, धोखे से ही प्राण गहे।
इस बालक के क्षत स्वप्नों का श्राप-ग्रहण करना होगा... शर-शैया पर भीष्म

3- किया कलंकित राजवंश जिसने तुम उनके साथ रहे,
दुर्योधन, दुःशासन के संग सदा अनीति धार बहे।
षड्यंत्रों पर कड़ा नियंत्रण किया कदाचित जो होता,
गांधारी के सौ पुत्रों पर राजमहल फिर क्यों रोता।
गिद्ध-भोज का अद्य भयंकर दृश्य सहन करना होगा.. शर-शैया पर भीष्म...

4-मधुसूदन से दूत अनोखे समझाने जब आये थे,
किस माया में अरे! तात तब, बोलो तुम भरमाये थे।
गीता का उपदेश, कर्म का पाठ पढ़ाया था जिसने,
संधि पत्र उस त्रैलोकी के, तुमने भी ठुकराए थे।
स्वयं अगन में पश्चाताप की, तुम्हें दहन करना होगा.. शर-शैया पर भीष्म..

उर्मिल का वनवास

रघुवर के संग संग में धाये, परम सनेही तुम कहलाये।
भ्रात प्रेम प्रतिमान तुम्ही थे, त्याग समर्पण ज्ञान तुम्हीं थे,
उर्मिल की पीड़ा का लेकिन,हो न सका आभास....
दिया है चौदह बरस वनवास.....लखनजी ....चौदह बरस वनवास

1- जंगल जंगल तुम भटके तो, महलों में मन तड़पा रोया,
इक इक शूल तुम्हारे पग का, मैंने धड़कन में ही बोया।
तुमने अपना धर्म निभाया, मैंने अपना सहचर खोया।
सेज पुलिन की मैं भी सोई, स्वप्न नयन की कारा रोया।
मन की हर इक क्षत अभिलाषा, ले बैठी सन्यास... दिया है.. क्यों मुझको,..

2-जीवन के सुनसान पटल पर, चित्र उकेरे कभी मिलन के,
कुछ पल ही तो अमूल्य निधि हैं, मुट्ठी में निर्धन जोगन के।
तुलसी के चौबारे दीपक, नित्य जलाया दिन गिन गिन कर,
चौखट पर रातों ने आंखें, रख दीं असुअन तेल से भर भर।
काल सदृश था पल पल जीवन, किंतु न टूटी आस..दिया है.. क्यों मुझको,..

3-तुम अवतार कहाए और मैं,पल पल विरह अगन में दहकी,
तुम आदर्श बड़े रख आए ,और फिरी मैं बहकी बहकी।
दिन निकला तो पीड़ा जागी, व्याकुलता ने रातें ढोई।
माना था उद्देश्य बड़ा पर,बलिवेदी पर मैं ही सोई।
तुम क्या जानो उर्मिल ने कितना भोगा संत्रास.. दिया है... क्यों मुझको..

पुरा वसन उतार सभ्यता

पुरा वसन उतार सभ्यता हुई नई नई,
विनाश पथ चली बनी कराल काल सहचरी।
उठो प्रवीर देश के संभाल खड्ग हाथ में,
विनष्ट वेद वृक्ष को करे विकास वल्लरी।

गगन में छिद्र हो गया, घुला है वात में ज़हर,
नयन की नींद खो गई, है ऊँघता हुआ शहर।
वो पीपलों की छांव, घाट हैं सरित के अब कहाँ,
इमारतों की भीड़ में,मनुज ही खो गया यहाँ।
कहाँ है राधिका सखी, कहाँ किशन की बाँसुरी.... विनष्ट वेद वृक्ष

सुलग रहा धधक रहा है काश्मीर स्वर्ग सा,
हृदय का प्रेम आपसी ढहा पुराने दुर्ग सा।
उठा रहा है शीश नक्सली प्रभाव हर जगह,
फसाद मज़हबी बढ़े न जाने आज किस वजह।
हुई है उग्र भावना,प्रबल प्रवृत्ति आसुरी.....विनष्ट वेद वृक्ष को....

सपूत राष्ट्र के ही बेचते वसन हैं भारती,
बना छदाम धर्म है, विलास की है आरती।
बिसात पर न राष्ट्र धर्म की समृद्धि तुम चखो,
अरे ओ कायरों ज़रा तो लाज दुग्ध की रखो।
पिघल रहा है क्षोभ से, रुदन करे है हिमगिरी.....विनष्ट वेद वृक्ष...

पुकारती हूँ मन्च से उठो सुवीर प्रण करो,
शहीद पथ पे शीश पुष्प वीरता के तुम धरो।
मरण जो देश हित में लाल कर गया जहान में,
धरा ने बाँह थाम ली, गगन झुका है शान में।
अमर वो नाम कर गया चढा स्वप्राण मंजरी.....विनष्ट वेद वृक्ष को

कहाँ गए सावन के झूले

कहाँ गए सावन के झूले, बारिश की छप छप छैया,
कहाँ नाव कागज़ की कोई बच्चा आज चलाता है।
आल्हा की तानों में गुंथित शौर्य कहानी वीरों की,
नहीं कोई बाँका जवान अब मधुर स्वरों में गाता है।

1-रिमझिम रिमझिम बौछारों में, भीग रहा तन मन आकुल,
कजरी की तानों में अपना बचपन जैसे ढूंढ रहा।
बंशी की धुन खोज रहा है सूनी सूनी रातों में,
चंद सुनहरे स्वप्न लिए पलकों को अपनी मूंद रहा।
झींगुर,दादुर, मोर, पपीहा, कौन देश के वासी हैं,
अब विरहन के मन में अगहन जाने कौन लगाता है.....नहीं कोई बाँका....

2-रामायण की चौपाई का मधुर स्वरों में वो गायन,
छोटे छोटे त्योहारों की मस्ती जीवित है मन में।
पकवानों की खुशबू से महका महका घर का आँगन,
लाल हिना हाथों की सुंदर अब तक अंकित है मन में।
मणिधर सर्पों की गाथाएं, सर्पी गायन ,लहराना,
सूनी रातों में अब भी इक सिहरन नई जगाता है.... नहीं कोई बाँका.....

3-मोती की झालर सी बूंदें भरकर अपनी मुट्ठी में,
यूँ लगता था जैसे हमने सागर कोई क़ैद किया।
काश लौट आए वो सावन, फिर घनघोर घटा लेकर,
जिसकी बूंद बूंद से अमृत,मनुभावों ने ख़ूब पिया।
यादों का बादल उड़ उड़ कर लहराता है आंखों में,
स्वप्न बीज अब भी अंतस के आंगन में बो जाता है...कहाँ नाव कागज़ की कोई..

सूर्य का आलोक रथ हूँ

सूर्य का आलोक रथ हूँ, चाँद का संदेश वाहक,
न्याय के पलड़े सुशोभित, आस्था का मंत्र हूँ मैं,
देश का गणतंत्र हूँ मैं... देश का गणतंत्र हूँ मैं.....

1-हूँ प्रबल विश्वास अधिकारों की समदर्शी नज़र का,
और कर्तव्यों की पावन-ज्योति का शुभ-दीप जलता।
राम के आदर्श, गीता का समूचा सार मुझमें,
कर्म के मोती लिए सद्भावना की सीप ढलता।
सर्वजन हित कल्पना का, लोकनायक यंत्र हूँ मैं...
देश का गणतंत्र हूँ मैं....

2- एकता की डोर में बांधे हुए हर जाति-मज़हब,
शांति की माला गले में, देश के लहरा रही है।
नीति-निर्देशक सुमन,गुलशन में हर सू खिल रहे हैं,
ज्ञान की विज्ञान की,अनुपम ध्वजा फहरा रही है।
जन का, जन के ही लिए, जनरूप-शासन तंत्र हूँ मैं....
देश का गणतंत्र हूँ मैं....

3-मेरे हर इक पृष्ठ पर, इतिहास की गौरव- कथा है,
और आगत की सुनहरी, सोच का परिणाम लिक्खा।
आज की हर मौज मेरे सिंधु की गहराइयों में,
और परिवर्तन के हर उपसर्ग का है नाम लिक्खा ।
इस वतन के मानसी मंदिर का पूजा- जंत्र हूँ मैं
देश का गणतंत्र हूँ मैं....देश का गणतंत्र हूँ मैं..

खूबसूरत लड़की

खूबसूरत है बहुत आंख से बोला करती,
अपना किरदार जो मोती से ही तौला करती।
थोड़ी नादान है थोड़ी सी है पागल लड़की,
गुल के रुखसार पे ख़ुश्बू का है आँचल लड़की.....

रोज़ खिड़की पे टंगी चाँद से बातें करती,
और सांसों में नए जज़्बों की ख़ुश्बू भरती।
लेके जुगनू से ज़िया करती है कमरा रोशन,
रोज सिरहाने के टेबल पे ही सपने धरती।
याद के दश्त का हो जाती है संदल लड़की.....

ख़ुद ही हँसती है कभी ख़ुद से ही बातें करती,
आंखों से सुब्ह करे जुल्फों से रातें करती।
रात भर बांचती है कौनसी रामायण वो,
चैन खोती है वो नींदों से भी घातें करती।
इन दिनों प्रेम की आंखों का है काजल लड़की....

आइना देख के वो ख़ुद ही में शर्माती है,
याद की सेज पे बस शाम से सो जाती है।
पुस्तकों में दबा पढ़ती है उपन्यास कभी,
चैट छुप छुप के कभी सेल पे पढ़ आती है।
हीर बनकर कभी हो जाती है बेकल लड़की....

कितनी मासूम है दुनिया को समझती जन्नत,
और जज़्बात की सौगात को सच्ची दौलत।
राधिका हो के समर्पण को ही जीवन माने,
बनके मीरा वो किशन को ही रतन धन जाने।
शिव जटाओं से बहे जल की है कल कल लड़की....

अश्रु नायक स्वागतम

रिक्तता के कोष में पीड़ा के वाहक स्वागतम,
हे मेरी जीवन-कथा के अश्रु-नायक स्वागतम।

1- जब कभी संवेदना के घट-नयन रीते हुए,
आ तुम्हीं ने प्यार से प्यासे अधर उसके छुए।
भाव के अतिरेक में बहने लगा उल्लास जब,
तुमने अभिव्यक्ति के पावन स्वर उसे बढ़कर दिए,
मेरे मनुभावों के उत्तम गीत- गायक स्वागतम...
हे मेरी जीवन-कथा के अश्रु-नायक स्वागतम..

2- बालहठ ने जब कभी भी ले लिया है जाल में,
तुम उतर आए हो बनकर चाँद जल की थाल में।
आचमन वात्सल्य करता है तुम्हारे नीर से,
तुम ही योद्धा बन लड़े हो फूटती तक़दीर से।
आस्था ,विश्वास के हे शुभ प्रदायक स्वागतम...
हे मेरी जीवन-कथा के अश्रु-नायक स्वागतम..

3- तेरी बाँहों में बिखरकर दर्द सिमटा है स्वयं,
शुध्द धारा में तिरोहित हो गया मन का अहम।
नेह के मंदिर में सज्जित हे!प्रणय के देवता,
शुद्धतम अहसास का तू ही निकटतम है पता।
हिय विरह-आलय के निर्मल-अग्निशामक स्वागतम...
हे! मेरी जीवन- कथा के अश्रु- नायक स्वागतम...
स्वागतम शुभ स्वागतम हे! अश्रु- नायक स्वागतम...

नवीन लक्ष्य मान हों

नवीन लक्ष्य मान हों, नवीन प्रण विधान हों
स्वप्न के तने हुए नैन में वितान हों।
काल चक्र घूमता,समय के पृष्ठ चूमता
वर्ष नव खड़ा है हाथ हर्ष का सितार ले,
धड़कनों में राग ज़िन्दगी के नव उतार ले....

1-आस्था के फूल कुछ चढा दिए थे चाह ने,
राह भी स्वयं चुनी पवित्रता की राह ने।
किसलिये हृदय में क्षुब्ध शोक भाव भर रहा,
मृग तृषा की गोद में तृषित ही आज मर रहा।
ज़िन्दगी है धूप सी, षोडसी ये रूपसी
प्रेम का पुनीत बन्ध बाँध के सँवार ले,.. धड़कनों में राग.....

2-कल जो आज बन गया, रहेगा आज भी नहीं,
वर्तमान के रहेंगे गुप्त राज़ भी नहीं।
थाम हास तितलियाँ, गिरा प्रभास बिजलियाँ

सिंधु में हृदय के तैरने दे नेह मछलियां।
हर नवीन आस को,खँगालने दे प्यास को,
वर्ष नव के माथ पर तिलक सृदश ही धार ले.. धड़कनों में राग.....

3-पंख ले पसार आसमान तक उड़ान हो,
काल पट्टिका पे तेरा भी अमिट निशान हो।
पर्वतों को तोड़ दे, सरित प्रवाह मोड़ दे,
रूढ़ियों के पाश को आ कि चल झिंझोड़ दे।
चेतना प्रबुद्ध हो,विचार वृत्ति शुद्ध हो,
वर्ष नव का स्वागतम हो नीति पुष्प हार ले... धड़कनों में राग.....

बदल गया अब गांव सखे

बदल गया अब गांव सखे, बदली बदली है चाल,
बैठ गया है शहर यहाँ भी ख़ोले अपनी पाल।

1-चुन्नू मुन्नू घर के अंदर बैठे टी वी पास,
नहीं दिखे पेड़ों पर झूले, या पतंग आकाश।
पनघट और कुंओं पर चलता खत्म हुआ परिहास,
सिमटी अमराई रोती है, पीपल खड़ा उदास।
हाथ मोबाइल लेकर बैठी, छमिया खेतों बीच,
हीरो गिरी दिखाता मुन्ना बांध गले रुमाल... बैठ गया है शहर यहाँ भी...

2- बैलों के गलघण्टी की वो मधुर मधुर आवाज़,
नहीं सुनाई देती बंशी, ढोलक, ढफली साज़।
ज़ोर ज़ोर से डी जे बजता, कनफोड़ू संगीत,
चैती, फगुआ, कजरी, ठुमरी, गायब हैं सब गीत।
राम राम के बदले हेलो हाय करें हैं लोग,
नहीं पेड़ के नीचे कोई लगती अब चौपाल... बैठ गया है शहर यहाँ भी...

3- बनी सड़क तो गया कमाने परबतिया परदेस,
गिरवी खेत नहीं छूटा पर बदल गया है भेस।
साल में एक बार आता है, लेकर कुछ सौ नोट,
किसे बताए पीड़ा अपनी किसे दिखाए चोट।
कीड़े सा जीवन जीता जो नाले पर झुग्गी डाल... बैठ गया है शहर यहाँ भी...

4- नहीं रहा मेरे सपनों का वो सुंदर सा गाँव,
वो नदिया के घाट सुहाने, वो अमुआ की छांव।
माना जीवन स्तर सुधरा,भाव गए पर रीत,
भोलापन मीठी बोली, खोई नैनों की प्रीत।
नहीं दिखे अब गोरी कोई, मुख पर घुँघटा डाल....बैठ गया है शहर यहाँ भी...

सजने लगी है डोली

सजने लगी है डोली रोता ये आसमां है।
इंसानियत का लुटता, फिर कोई कारवां है।
क्यों सुर्ख लाल जोड़ा, बाबुल हुआ कफ़न ये,
ससुराल से सुता की अर्थी उठी जवां है....

1-देकर दहेज बाबुल भेजा था ख़ूब मुझको,
मेरी ख़ुशी की कितनी, रहती थी फिक्र तुझको।
घर तक रखा था गिरवी, घर मेरा तब बना था,
लालच के भेड़ियों के, मुँह खून लग गया था।
जब पेट भर न पाया, दी मौत की सजा है,
हर चीख् मेरी अब तक, दीवार में निहां है.... ससुराल से सुता की....
2- कहते थे तुम परी और नाजों से ख़ूब पाला,
फिर राक्षसों के आगे, क्यों तुमने मुझको डाला।
रोती रही मै बाबुल, पिघले न संग दिल ये।
सारे बदन पे मेरे मिट्टी का तेल डाला,
धू धू के जल रही थी, करती गुहार बेटी,
ईश्वर बता कहाँ तू और किस पे मेहरबां है.... ससुराल से सुता की....
3- अब चाहती हूँ इतना, बेटी ही बनके आऊँ,
मारी गई जहाँ पर, उस घर में जन्म पाऊँ।
बाबुल तुम्हारी पीड़ा समझेंगे तब ये दानव,
जा कर के दूसरे घर, फिर से मैं मारी जाऊं।
शायद मनुजता जागे, परिदृश्य कुछ तो बदले,
बस मेरी आत्मा में, ख्वाहिश यही रवां है.... ससुराल से सुता की....

रंग मन के पृष्ठ भरता कौन चित्रकार है

रंग मन के पृष्ठ भरता कौन चित्रकार है,
तूलिका से भाव की उकेरता जो प्यार है।
ओस कण सा फूल पे ख़ुशी के अश्रु रो गया,
कौन मन धरा पे स्वप्न बीज नवल बो गया।

1- श्वांस श्वांस संदली हैं, धड़कनें हैं मखमली,
प्रीत के सदन में गृह प्रवेश की है खलबली।
नव युगल प्रणय की पालकी में अब सवार है,
झनझना के मन का बज रहा हरेक तार है।
तम की कैद में विरह का पँछी जा के सो गया.... कौन मन धरा.....!

2- तितलियों सी उड़ रही है आस नैन की गली,
सुख भ्रमर ने चूम ली हृदय की हर कली कली।
चाँद का उजास शब्द शब्द आज ढल गया,
धूप चाहतों की भी बदन पे कोई मल गया।
मन मदिर ये नीड़ प्रेम कल्पना में खो गया.....कौन मन धरा पे.....!

3- आरती के बोल सी प्रदीप्त कल्प कामना,
ओम नाद ब्रह्म की प्रणव पुनीत साधना,
चिर अनन्त काम कोटि राग गूंजने लगे,
शाख शाख नव सृजन विहग भी कूंजने लगे।
बन्ध जन्म जन्म का प्रगाढ़ आज हो गया....कौन मन धरा पे.....!

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - दीपशिखा सागर
माता - श्रीमती शशी श्रीवास्तव
पिता - कैप्टन भुवन श्रीवास्तव
पति - डॉ कर्मवीर सिंह सागर
जन्म - 11 मई 1973, वारासिवनी
शिक्षा - एम.ए. (राजनीति शास्त्र)
कार्यक्षेत्र - गृहिणी, लेखिका, कुछ सामाजिक संस्थाओं और रामायण मंडली के द्वारा नारी उत्थान एवं जन जागरण का कार्य।
विधा - ग़ज़ल, हिन्दी छंद, कविता, गीत।
प्रकाशन - 'उफ्फ' एकल ग़ज़ल संग्रह, लगभग 20 से ज्यादा साझा संकलन, ग़ज़ल, गीत एवं मुक्तक।
सम्मान - बालकृष्ण शर्मा नवीन स्मृति पुरस्कार, साहित्य शशि सम्मान, शब्द शक्ति सम्मान, जिज्ञासा शिरोमणी, मुक्तक रत्न, मुक्तक सम्राट और ग़ज़ल के क्षेत्र में अनेकों सम्मान।
अन्य - विभिन्न प्रतिष्ठित पत्र पत्रिकाओं में निरंतर रचनाएँ निरंतर प्रकाशित एवं फेसबुक के लगभग हर मंच से, हर विधा में ढ़ेरों सम्मान।
मुशायरों और कवि सम्मेलनों में देश के ख्यातिनाम व्यक्तियों, ग़ज़लकारों के साथ मंच साझा करने का गौरव प्राप्त।

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी।

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-5372-026-1
मूल्य- 60/-